PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD
Middle School Teacher Eligibility Test - 2018
10th Mar 2019 2:30 PM

Topic:- Child Development & Pedagogy (CDP)

1) **Which of the following is not a level of mental retardation? / निम्नलिखित में से कौन मानसिक मंदता का स्तर नहीं है?**

1. Profound / नम्र
2. Severe / गंभीर
3. Savant / विद्वान
4. Mild / सौम्य

Correct Answer :-

- Savant / विद्वान

2) **Which of the following is least true about the process of growth? / निम्नलिखित में से कौन-सा वृद्धि की प्रक्रिया के बारे में सबसे कम सत्य है?**

1. It represents change in a person's quantifiable characteristics. / यह व्यक्ति की मात्रात्मक विशेषताओं में परिवर्तन को प्रदर्शित करता है।
2. It is necessary for aspects of development. / यह विकास के पक्षों के लिए आवश्यक है।
3. It can only be assessed. / इसका केवल आकलन किया जा सकता है।
4. It is not a continuous process. / यह एक सतत् प्रक्रिया नहीं है।

Correct Answer :-

- It can only be assessed. / इसका केवल आकलन किया जा सकता है।

3) CANCELLED

The system of society wherein primary power, moral authority, social privilege and control of property are dominated by males is known as _______ / समाज

1. Masculinity / पुरुषत्व
2. Patrilineal / पितृवंशीय
3. Patriarchy / पितृसत्ता
4. Matriarchy / मातृसत्ता

Correct Answer :-

- Patriarchy / पितृसत्ता

4) **Vocational guidance primarily helps students to: / व्यावसायिक मार्गदर्शन मुख्य रूप से छात्रों को निम्न में मदद करता है:**

1. Choose a life partner/ एक जीवन साथी के चयन में
2. Choose an occupation/ एक पेशे के चयन में
3. Solve a personal problem/ एक व्यक्तिगत समस्या के समाधान में
4. Select subjects/ विषयों का चयन करने में

Correct Answer :-

- Choose an occupation/ एक पेशे के चयन में

5) **When twins are born from separate zygotes, they are called: / जब जुड़वां बच्चे अलग-अलग युग्मों (जॉयगोट्स) से पैदा होते हैं, तो उन्हें कहा जाता है:**

1. Identical twins / आईडेंटिकल ट्वीन्स
2. Siblings / सिबलिंग्स
3. Spouses / स्पॉउस
4. Fraternal twins / फ्रेटनल ट्वीन्स

Correct Answer :-

- Fraternal twins / फ्रेटनल ट्वीन्स

6) When a teacher finds diversity in the classroom, it is better that s/he/ जब एक शिक्षक कक्षा में विविधता पाता है, तो यह बेहतर है कि वह:

1. Divides the class into small groups/ कक्षा को छोटे समूहों में विभाजित करें।

2. Categorizes the pupils according to diversity/ विविधता के अनुसार विद्यार्थियों को वर्गीकृत करें।

3. Combines all of them together/ इन सभी को एक साथ मिला लें।

4. Sends the pupils from diverse groups out of the class/ विभिन्न समूहों के विद्यार्थियों को कक्षा से बाहर भेजें।

Correct Answer :-

- Combines all of them together/ इन सभी को एक साथ मिला लें।

7) An Individualized Education Plan (IEP) is: / एक व्यक्तिगत शिक्षा योजना (आईईपी) है:

1. A plan created for every student in a classroom/ एक कक्षा में प्रत्येक छात्र के लिए बनाई गई योजना।

2. A subsection of the No Child Left Behind-Act/ कोई भी बच्चा पीछे न छूटे-अधिनियम की एक उपधारा।

3. A contract that must be followed as specified/ एक अनुबंध जिसका निर्दिष्ट रूप में पालन किया जाना चाहिए।

4. An outline for the general education teacher/ सामान्य शिक्षा शिक्षक के लिए एक रूपरेखा।

Correct Answer :-

- A contract that must be followed as specified/ एक अनुबंध जिसका निर्दिष्ट रूप में पालन किया जाना चाहिए।

8) Which genetic disorder is found only in females? / कौन सा आनुवंशिक विकार केवल महिलाओं में पाया जाता है?

1. Phenylketonuria / फेनिलकीटोन्यूरिया

2. Turner Syndrome / टर्नर सिंड्रोम

3. Down Syndrome / डाउन सिंड्रोम

4. Klinefelter Syndrome / क्लाइनफेल्टर सिंड्रोम

Correct Answer :-

- Turner Syndrome / टर्नर सिंड्रोम

9) To make socialization successful, it is necessary for parents to establish _________ as early as possible in the infant's life. / समाजीकरण को सफल बनाने के लिए, माता-पिता के लिए यह आवश्यक है कि वे शिशु के जीवन में _________ को जल्द से जल्द स्थापित करें।

1. Rules / नियमों

2. Routine / दिनचर्या

3. Rapport / तालमेल

4. Restrictions / प्रतिबंधों

Correct Answer :-

- Routine / दिनचर्या

10) What animal was used in Watson's experiment of classical conditioning? / वॉटसन ने क्लासिकी कन्डीशनिंग (चिरप्रतिष्ठित प्रानुकूलन) के प्रयोग में किस जानवर का उपयोग किया था?

1. Cat / बिल्ली

2. Pigeon / कबूतर

3. Dog / कुत्ता

4. Rabbit / खरगोश

Correct Answer :-

- Rabbit / खरगोश

11) Children who come from homes with unfavorable parent- child relationships tend to be _____. / जिन घरों में माता-पिता और बच्चों का संबंध अच्छा नहीं होता है वो बच्चे ______ होते हैं।

1. Less impulsive / कम आवेगी
2. Good at intellectual control / अच्छे बौद्धिक नियंत्रण वाले
3. Successful in social participation / सामाजिक भागीदारी में सफल
4. Intolerant of others / दूसरों के प्रति असहिष्णु

Correct Answer :-

- Intolerant of others / दूसरों के प्रति असहिष्णु

---

12) Learner-centered education includes: / शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा में शामिल हैं:

1. Year-end appraisal / वर्ष के अंत में मूल्यांकन
2. Control over learning process / अधिगम प्रक्रिया पर नियंत्रण
3. Control by the study program / अध्ययन कार्यक्रम द्वारा नियंत्रण
4. Disciplinary force / अनुशासन बल

Correct Answer :-

- Control over learning process / अधिगम प्रक्रिया पर नियंत्रण

---

13) Learning swimming or riding a horse is _____ learning. / तैराकी या घुड़सवारी का अधिगम ______अधिगम होता है।

1. Motor / मोटर
2. Associate / सम्मिलित (एसोसिएट)
3. Serial / क्रमिक (सीरियल)
4. Problem / समस्या

Correct Answer :-

- Motor / मोटर

---

14) A baby appears surprised every time her mother covers her eyes and then uncovers them. What Piagetian cognitive concept has the baby not yet understood that makes this game so exciting? / एक बच्चा हर बार हैरान होता है जब उसकी माँ अपनी आँखों को ढ़ंक लेती है और फिर उन्हें खोल देती है। किस पियाजेटियन संज्ञानात्मक अवधारणा को बच्चा अभी तक समझ नहीं पाया है जो इस खेल को इतना रोमांचक बनाता है?

1. Conservation / संरक्षण
2. Seriation / क्रमबद्धता
3. Object permanence / वस्तु स्थायित्व
4. Animism / जीववाद

Correct Answer :-

- Object permanence / वस्तु स्थायित्व

---

15) What is the study of the smallest units of speech known as? / भाषण (स्पीच) की सबसे छोटी इकाइयों के अध्ययन को क्या कहा जाता है?

1. Morphology / आकृति विज्ञान
2. Morphemes / रूपिम
3. Phonemes / स्वनिम
4. Phonology / ध्वनि विज्ञान

Correct Answer :-

- Phonology / ध्वनि विज्ञान

---

16) Which of the following is not a type of intelligence described by Sternberg? / निम्नलिखित में से कौन सा स्टर्नबर्ग द्वारा वर्णित एक प्रकार की बुद्धि नहीं है?

1. Logical-mathematical element / तार्किक-गणितीय तत्व
2. Experiential element / अनुभवजन्य तत्व

3. Componential element / घटक तत्व

4. Contextual element / संदर्भीय तत्व

Correct Answer :-

- Logical-mathematical element / तार्किक-गणितीय तत्व

---

17) The earliest manifestation of inner speech in Vygotsky's view is_________. / वाइगोत्स्की के विचार में आंतरिक भाषण की सबसे पहली अभिव्यक्ति _________ है।

1. private thought/ निजी विचार

2. private speech/ निजी भाषण

3. social speech/ सामाजिक भाषण

4. personal speech/ व्यक्तिगत भाषण

Correct Answer :-

- private speech/ निजी भाषण

---

18) Which of the following is not a social motive that drives behavior? / निम्नलिखित में से कौन-सा एक सामाजिक अभिप्रेरक नहीं है जो व्यवहार को संचालित करता है?

1. Achievement / उपलब्धि

2. Power / शक्ति

3. Intelligence/ बुद्धि

4. Affiliation / सम्बन्धन

Correct Answer :-

- Intelligence/ बुद्धि

---

19) Which American psychologist developed psychological connectionism – the belief that connections are formed between perceived stimuli and emitted responses? / किस अमेरिकी मनोवैज्ञानिक ने मनोवैज्ञानिक संबंधवाद विकसित किया - यह विश्वास है कि संबंध, कथित उत्तेजनाओं और उत्सर्जित प्रतिक्रियाओं के बीच बनते हैं।

1. Jean Piaget / जीन पियाजे

2. Francis Galton / फ्रेंकिस गेल्टन

3. Edward Thorndike / एडवर्ड थार्नडाइक

4. Charles Spearman / चार्ल्स स्पीयरमैन

Correct Answer :-

- Edward Thorndike / एडवर्ड थार्नडाइक

---

20) From Big five personality dimensions, behaviors such as speaking fluently, displaying ambition and exhibiting a high degree of intelligence is ________. / बड़े पाँच व्यक्तित्व आयामों से, धाराप्रवाह बोलने, महत्वाकांक्षा प्रदर्शित करने और उच्च स्तर की बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करने का व्यवहार ________ है।

1. Extraversion / बहिर्मुखता

2. Openness / स्पष्टोक्ति (ओपननेस)

3. Conscientiousness/ कर्तव्यनिष्ठा

4. Neuroticism / मनोविक्षुब्धता

Correct Answer :-

- Conscientiousness/ कर्तव्यनिष्ठा

---

21) According the Vygotsky, the following are transmitted from generation to generation, except ______. / वाइगोत्सकी के अनुसार, ________ को छोड़कर निम्नलिखित पीढ़ी से पीढ़ी तक हस्तांतरित होते हैं ।

1. Beliefs / धारणाएं

2. Values / मूल्य

3. Ignorance / अज्ञानता

4. Traditions / परम्पराएं

Correct Answer :-

- Ignorance / अज्ञानता

---

22) Fraternal twins are born of from ______. / भ्रातृ-यमज (फ्रटर्नल ट्वीन्स) ________ से पैदा होते हैं।

1. No ovum / कोई डिंब नहीं

2. one ovum / एक अंडाणु

3. two ova / दो अंडाणु

4. one sperm / एक शुक्राणु

Correct Answer :-

- two ova / दो अंडाणु

---

23) What concept denotes the belief that one can effectively produce desired outcomes in a particular area? / कौन सी अवधारणा ऐसे विश्वास को निरूपित करती है जो कोई विशेष क्षेत्र में वांछित परिणाम प्राप्त कर सकता है?

1. Self-efficacy / स्व-प्रभावकारिता

2. Self-knowledge / आत्म-ज्ञान

3. Self-esteem / आत्म-सम्मान

4. Self-conception / स्व-संकल्पना

Correct Answer :-

- Self-efficacy / स्व-प्रभावकारिता

---

24) Brainstorming as a technique helps to improve ______ in the learning process. / एक तकनीक के रूप में विचार मंथन (ब्रेन स्टॉर्मिंग) से अधिगम की प्रक्रिया में ______ को बेहतर बनाने में मदद मिलती है।

1. Skills / कौशल

2. Language / भाषा

3. Creativity / रचनात्मकता

4. Critical Thinking / गहन चिंतन

Correct Answer :-

- Creativity / रचनात्मकता

---

25) Play way method of teaching has been emphasised in the scheme of the education of : / शिक्षण की खेल विधि _______ की शिक्षा की स्कीम में जोर देती है।

1. Naturalists / प्रकृतिवादी

2. Realists / यथार्थवादी

3. Existentialists / अस्तित्ववादी

4. Pragmatists / व्यवहारवादी

Correct Answer :-

- Naturalists / प्रकृतिवादी

---

26) CANCELLED

Which of the following is a socialization agency? / निम्नलिखित में से कौन एक समाजीकरण एजेंसी है?

1. All of the above / उपर्युक्त सभी

2. Society only / केवल सोसायटी (समिति)

3. School only / केवल स्कूल

4. Family only / केवल परिवार

Correct Answer :-

- All of the above / उपर्युक्त सभी

---

27) CANCELLED

A learning style of the students of every age are affected by their /
हर उम्र के छात्रों की एक अधिगम शैली उनके _____ द्वारा प्रभावित होती है।

1. All the above / उपर्युक्त सभी
2. Environment only / केवल वातावरण
3. Emotions only / केवल भावनाओं
4. Sociological needs only / केवल समाजशास्त्रीय आवश्यकताओं

Correct Answer :-

- All the above / उपर्युक्त सभी

---

28) CANCELLED

Attribution theory is a theory proposed by: / गुणारोपण सिद्धांत (एट्रीब्यूशन थ्योरी) को इनके द्वारा प्रतिपादित किया गया:

1. Jean William Fritz Piaget / जीन विलियम फ्रिट्ज पियाजे
2. Bernard Weiner / बेर्नार्ड विनर
3. B.F. Skinner / बी. एफ. स्किनर
4. Abraham Maslow / अब्राहम मास्लो

Correct Answer :-

- Bernard Weiner / बेर्नार्ड विनर

---

29) **The least effective method to attract students' interest and attention is: / छात्रों की रुचि और ध्यान आकर्षित करने के लिए सबसे कम प्रभावी तरीका है:**

1. Lecture method/ व्याख्यान विधि
2. Role play method / भूमिका निर्वाह विधि
3. Discussion method / चर्चा विधि
4. Game method / खेल विधि

Correct Answer :-

- Lecture method/ व्याख्यान विधि

---

30) **Deemphasizing rote learning is a part of: / डीमफेसाइज़िंग कंटस्थ अधिगम निम्न का एक हिस्सा है:**

1. Special needs education / विशेष आवश्यक शिक्षा
2. Learner-centred education / शिक्षार्थी (लर्नर) केंद्रित शिक्षा
3. Progressive education / प्रगतिशील शिक्षा
4. Interactive education / परस्पर शिक्षा

Correct Answer :-

- Progressive education / प्रगतिशील शिक्षा

Topic:- General Hindi (L1GH)

1) **अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।**

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कवि के अनुसार भगवान के स्पर्श से कैसे मनुष्य का कल्याण हो जाता है?

1. अछूत

2. ईमानदार

3. नेक

4. बेहतर

Correct Answer :-

- अछूत

---

2) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: कवि के अनुसार भगवान अपने प्रताप से किसी नीच को भी क्या कर सकते हैं?

1. धनी बना सकते हैं।

2. ऊँचा बना सकते हैं।

3. राजा बना सकते हैं।

4. वरदान दे सकते हैं

Correct Answer :-

- ऊँचा बना सकते हैं।

---

3) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्नः 'हरिजीउ ते सभै सरै' का क्या अर्थ है?

1. इनमें से कोई नहीं।
2. हरि जी सबके ईश्वर हैं।
3. हरि जी से सब कुछ संभव हो जाता है।
4. ईश्वर का नाम हरि है।

Correct Answer :-

- हरि जी से सब कुछ संभव हो जाता है।

---

4) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्नः 'बास' शब्द का क्या अर्थ है?

1. रनिवास
2. गंध
3. निवास
4. आवास

Correct Answer :-

- गंध

---

5) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्नः 'नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु' का नाम लेने से कवि का क्या तात्पर्य है?

1. उपर्युक्त में से कोई नहीं
2. अपनी जानकारी का प्रभाव दिखाना

3. इन लोगों से उनकी मित्रता थी

4. जैसे इन संत कवियों का उद्धार हुआ वैसे बाकियों का भी होगा

Correct Answer :-

- जैसे इन संत कवियों का उद्धार हुआ वैसे बाकियों का भी होगा

---

6) **अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।**

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: भगवान के माथे पर क्या शोभा दे रहा है?

1. मुकुट

2. जेवर

3. छत्र

4. कलश

Correct Answer :-

- छत्र

---

7) **अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।**

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: मोर बादल को देखते ही क्या करने लगता है?

1. शयन

2. आलिंगन

3. भोजन

4. नृत्य

Correct Answer :-

- नृत्य

---

8) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: यदि भगवान बादल हैं तो भक्त किसके समान हैं?

1. जंगल के समान
2. आसमान के समान
3. धरती के समान
4. किसी मोर के समान

Correct Answer :-

- किसी मोर के समान

---

9) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: यदि भगवान चाँद हैं तो भक्त किसकी तरह है जो अपलक चाँद को निहारता रहता है?

1. मैना
2. चकोर
3. कौआ
4. मयूर

Correct Answer :-

- चकोर

---

10) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: यदि भगवान मोती हैं तो भक्त किसके समान है?

1. सोने के समान
2. धागे के समान जिसमें मोती पिरोते हैं
3. चाँदी के समान
4. हीरे के समान

Correct Answer :-

- धागे के समान जिसमें मोती पिरोते हैं

---

11) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: यदि भगवान दीपक हैं तो भक्त किसकी तरह हैं?

1. चिराग की तरह
2. तेल की तरह
3. ईंधन की तरह
4. बाती की तरह

Correct Answer :-

- बाती की तरह

---

12) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो क्या होता है?

1. जल्दी ही उतर जाता है।
2. तो फिर कभी नहीं छूटता।
3. रंग बेरंग हो जाता है।
4. रंग फीका पड़ जाता है।

Correct Answer :-

- तो फिर कभी नहीं छूटता।

---

13) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: इस पद में कवि ने भक्त की किस अवस्था का वर्णन किया है?

1. जब भक्त पर भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है।
2. उपर्युक्त में से कोई नहीं
3. जब भक्त चारों ओर से निराश हो जाता है।
4. जब भगवान से भक्त शिकायतें करता है।

Correct Answer :-

- जब भक्त पर भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है।

---

14) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: यदि भगवान चंदन हैं तो भक्त क्या है?

1. आग

2. पानी

3. गृहस्थ

4. मनुष्य

Correct Answer :-

- पानी

15) **अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।**

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी , जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती , जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा , जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा , ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

उपर्युक्त पद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: जैसे चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है वैसे ही प्रभु की भक्ति कहाँ समा जाती है?

1. भक्त के कपड़ों में

2. भक्त के अंग-अंग में

3. भगवान के मंदिर में

4. भक्त के घर में

Correct Answer :-

- भक्त के अंग-अंग में

16) **यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।**

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्हेंाने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: उन्होंने सब साहित्यों से लिया और सबको क्या दी?

1. कागज-कलम

2. अपनी भेंट

3. कुछ नहीं

4. वस्त्राभूषण

Correct Answer :-

- अपनी भेंट

17) **यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों**

ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: हिंदी साहित्य में मिलने वाले किसके मार्ग रुक गए?

1. उपन्यासों के

2. कहानियों के

3. रचनाओं के

4. विभिन्न स्रोतों के

Correct Answer :-

- विभिन्न स्रोतों के

---

18) यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य क्या बन कर रह गया?

1. जनमार्ग

2. राजमार्ग

3. प्रेममार्ग

4. सँकरी गली

Correct Answer :-

- सँकरी गली

---

19) यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा क्या था?

1. हृदय का भाव

2. प्रेम का भाव

3. स्याही का अभाव

4. स्नेह का अभाव

Correct Answer :-

- हृदय का भाव

---

20) **यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।**

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में क्या करना था?

1. धन अर्जन

2. स्वच्छंद विहार

3. यश अर्जन

4. प्रच्छन्न निर्वाह

Correct Answer :-

- स्वच्छंद विहार

---

21) **यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।**

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल किसकी डेंगी पर छिछली खेलता रहा?

1. प्रेम और घृणा

2. प्रेम और विरह

3. त्याग और करुणा

4. श्रद्धा और भक्ति

Correct Answer :-

- प्रेम और विरह

---

22) **यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।**

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: चारों ओर लोग किसमें डूब-उतरा रहे हैं?

1. तालाब में

2. अवसाद में

3. नदी में

4. गंगा में

Correct Answer :-

- अवसाद में

---

23) यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्हेंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: भारत-भूमि का क्या उनके कानों में विलख उठता था?

1. एक-एक कण

2. एक-एक उत्पीड़न

3. एक-एक मृत्यु

4. एक-एक घटना

Correct Answer :-

- एक-एक कण

---

24) यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्हेंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: हम प्यारे हरिश्चंद्र की क्या मना रहे हैं?

1. द्विशती

2. त्रिशती

3. अर्द्धशती

4. जन्मशती

Correct Answer :-

- जन्मशती

---

25) यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को क्या करके देखा?

1. मिलाकर

2. सामूहिक

3. अलग

4. समवेत

Correct Answer :-

- अलग

---

26) यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में क्या होता जा रहा है?

1. तरल और गरल

2. संवेनशील और मननशील

3. जटिल और लोक-अग्राह्य

4. सरल और सहज

Correct Answer :-

- जटिल और लोक-अग्राह्य

---

27) यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की क्या है?

1. उपन्यास-लघुकथा

2. करुण-कहानी

3. आलोचना-निबंध

4. कविता-कहानी

Correct Answer :-

- करुण-कहानी

28) **यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।**

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: भारतेंदु के बोए हुए बीज किसकी हिमानी में गल पच गए?

1. आधुनिकतावादी
2. छायावादी
3. प्रयोगवादी
4. समकालीन

Correct Answer :-

- छायावादी

---

29) **यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।**

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: भारतेंदु ने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर क्या करने का उपदेश दिया?

1. लिखने का
2. पढ़ने का
3. लूट मचाने का
4. खरीद कर लाने का

Correct Answer :-

- लूट मचाने का

---

30) **यद्यपि आज हम मना रहे हैं प्यारे हरिश्चंद्र की जन्मशती पर क्या यह सच नहीं है कि आज केवल उनकी कहानी भर रह गई है? क्या यह सच नहीं कि हिंदी और हिंदी कविता भारतेंदु और उनकी स्वस्थ परम्पराओं से कोसों दूर हो गई है? क्या भारतेंदु के बोए हुए बीज कुछ तो छायावादी हिमानी में गल पच नहीं गए और कुछ प्रगतिवादी आँच पाकर एक दम भुन नहीं गए हैं? चारों ओर लोग अवसाद में डूब उतरा रहे हैं और हिंदी के विकास के लिए अंधे होकर मार्ग टटोल रहे हैं, पर यह नहीं देखते हैं कि ज्योति नहीं है, प्राण नहीं है, भाषा और साहित्य में भारतेंदु युग की जीवनी शक्ति नहीं है, भाषा बनाव-सिंगार से बचते-बचते सादगी के अधिकाधिक मोह में कृत्रिमर होती जा रही है। साहित्य अंतर्मुख होने के प्रयत्न में जटिल और लोक-अग्राह्य होता जा रहा है। उदारता का दावा हम आज चाहे जितना कर लें, परंतु हम अपने रंगीन चश्मे से केवल अपनी नाक की सीध देख पाते हैं,सौ भी अपने असली रंग में नहीं। इन सब के मूल में क्या है? यही हरिश्चंद्र की और उनके हाथ से रोपे हुए पौधों की करुण कहानी।**

सुनिएगा? हरिश्चंद्र ने भाषा और साहित्य को अलग करके देखा, और एक भाषा के लिए लड़ाई लड़ते हुए भी उन्होंने संपर्क में आने वाले सभी साहित्यों के खुले खजाने में जाकर लूट मचाने का न केवल उपदेश दिया बल्कि वे स्वयं इस डकैती में अगुवा बने। संस्कृत, बँगला, उर्दू, गुजराती और मराठी किसी को छोड़ा नहीं। सब साहित्यों से लिया और सबको अपनी भेंट भी दी। उनके साथी भी इस उदार दृष्टि को लेकर आगे बढ़े पर हाय रे दुर्दैव, धीरे-धीरे हिंदी और हिंदी साहित्य को इस प्रकार यारों ने एक खूँटे में बाँधा कि हिंदी साहित्य सँकरी गली बन कर रह गया। चोरी तो लोग करते रहे, पर डकैती, वह भी खुली डकैती का साहस और आत्म-बल किसी में आगे आया नहीं। इसलिए हिंदी साहित्य में मिलने वाले विभिन्न स्रोतों के मार्ग रुक गए और वह खारी झील बनकर रह गया। लोग कहेंगे हरिश्चंद्र और हरिश्चंद्र मंडल तो प्रेम और विरह की डेंगी पर छिछली खेलता रहा, जीवन की गहराई में पैठने का उसने यत्न तक नहीं किया; हाँ, वे डूबे तो फिर ऊपर आने के लिए, नीचे बैठ जाने के लिए नहीं। उन्हें जीवन के व्यापक क्षेत्रों में स्वच्छंद विहार करना था, गले में पाथर बाँधकर डूब नहीं मरना था। साथ ही उनमें दंभ न था, सीधा सच्चा हृदय का भाव था, शहर के अंदेशे से दुबला रहने वाला काजीपन उनमे नहीं था,वे देश की दुर्दशा में विकल होते तो अतीत की एक-एक स्मृति उन्हें दंश मारने लगती थी, भारत-भूमि का एक-एक कण उनके कानों में विलख उठता था। जब जनजीवन के उत्सव आते तो अपना सुख-दुख उसी के राग में डुबो देते थे।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताइए।

प्रश्न: हिंदी और हिंदी कविता किनकी स्वस्थ परंपराओं से कोसों दूर हो गई है?

1. कवितेंदु

2. भारतेंदु

3. प्रेमघन

4. बालकृष्ण भट्ट

Correct Answer :-

- भारतेंदु

Topic:- General Sanskrit(L2GS)

1) **CANCELLED**

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

मम सुप्रियं पुस्तकं श्रीमद्भगवद्गीताऽस्ति । इयं महाभारतमूला वर्तते । तत्त्वतो महाभारतस्य सारं निःसार्य श्रीमद्भगवद्गीतायां निहितं श्रीवेदव्यासेन । गीतायाम् उपनिषदः सारः अपि अस्ति । उक्तं हि-"सर्वोपनिषदो गावः दोग्धा गोपालनन्दनः । पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता, दुग्धं गीताऽमृतं महत्" । "गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः । या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता" ।
स्वयं भगवान् श्रीकृष्णः गीतायाः माहात्म्यमेवं वर्णयति -"श्रद्धावाननसूयश्च श्रृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाल्लोकन्प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम्" । गीता धर्मज्ञानस्य एकः महान् कोषोऽस्ति । जीवनविकासाय सर्वे अपि विचाराः गीयातां दृश्यन्ते । तेषां सामञ्जस्यम् अपि अत्र श्लाघ्यं खलु । गीतायाः अनासक्तिकर्मयोग-सिद्धान्तः महत्त्वपूर्णः खलु । अयम् एव सिद्धान्तः आर्यधर्मस्य सर्वोत्कृष्टः सिद्धान्तः अस्ति । गीताधर्मः क्रान्तिकारी, प्रगतिशीलः, समुच्चयात्मकः च अस्ति । गीतायाः भक्तिमार्गे न योनिभेदः, न जातिभेदः न च श्रेणीभेदः दृश्यते । विदेशेषु अपि दर्शनशास्त्रविषये गीता पाठ्यपुस्तक-रूपेण स्वीकृता अस्ति । किं बहुना यावत् कालं मनुष्यः तापत्रयपीडितो भविष्यति तावत्कालं सः श्रीमद्भगवद्गीतां श्रृत्वा पठित्वा च शान्तिं लप्स्यति ।

तापत्रयं नाम एतत् अस्ति ।

1. आद्यात्मादिभौतिकादिदैविकम्

2. कटुतिक्तमधुराणि

3. धर्माथकामाः

4. कामार्थमोक्षाः

Correct Answer :-

- आद्यात्मादिभौतिकादिदैविकम्

2)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

अङ्गिरसगोत्र- उत्पन्नः वाल्मीकिः पूर्वं दस्युः आसीत् । तदा तस्य नाम रत्नाकरः आसीत् । वने निवसन् अयं पथिकान् आक्रम्य तेषां धनमाहृत्य स्वपरिवारपालनं करोति स्म । एकदा नारदं बद्धवा स धनं दातुमवदत्। नारदः अवदत् - 'येषां परिवारजनानां पालनाय त्वं पापकर्म करोषि किं ते पापफलेऽपि सहभागिनः भविष्यन्ति ? गृहं गत्वा रत्नाकरः तान् अपृच्छत् । तेऽवदन् अस्माकं परिपालनं तव कर्तव्यम् । न वयं पापभागिनः इति ।
तदा मुनेर्नारदस्य उपदेशेन अयं परमेश्वरभक्तः अभवत् । तपसा अयं ऋषिपदवीमलभत । एकदा अयं प्रातःकाले गंगा स्नानं कृत्वा स्वाश्रमं प्रति अगच्छत् । मार्गे व्याधबाणविद्धं क्रौञ्चं दृष्ट्वा तस्य मुखात् स्वयमेव श्लोकः निःसृतः । नारदमुनिप्रेरणया वाल्मीकिः रामचरितमाश्रित्य 'रामायणम्' नामकं महाकाव्यमरचयत् । तदा 'आदि-कविः' इति नाम्ना प्रसिद्धः अभवत् । अस्य रामायणं न केवलं संस्कृतभाषायाः आदिकाव्यम् अस्ति, अपि तु भारतीयानां सर्वेषामपि भाषाणां रामचरित-साहित्यस्य मूलाधारः। धन्यः महाकविः वाल्मीकिः यस्य कविता देशकालातीता अस्ति ।

एते पापफलभागिनः भवितुं नेच्छन्ति-

1. रत्नाकरः
2. परिवारजनाः
3. नारदः
4. सहभागिनः

Correct Answer :-

- परिवारजनाः

3)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परादेवता
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥

विद्या कुत्र बन्धुजनो भवति?

1. पाठशालायां
2. एकोऽपि न
3. विदेशगमने
4. विद्यालये

Correct Answer :-

- विदेशगमने

4)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

अङ्गिरसगोत्र- उत्पन्नः वाल्मीकिः पूर्वं दस्युः आसीत् । तदा तस्य नाम रत्नाकरः आसीत् । वने निवसन् अयं पथिकान् आक्रम्य तेषां धनमाहृत्य स्वपरिवारपालनं करोति स्म । एकदा नारदं बद्ध्वा स धनं दातुमवदत्। नारदः अवदत् - 'येषां परिवारजनानां पालनाय त्वं पापकर्म करोषि किं ते पापफलेऽपि सहभागिनः भविष्यन्ति ? गृहं गत्वा रत्नाकरः तान् अपृच्छत् । तेऽवदन् अस्माकं परिपालनं तव कर्तव्यम् । न वयं पापभागिनः इति ।
तदा मुनेर्नारदस्य उपदेशेन अयं परमेश्वरभक्तः अभवत् । तपसा अयं ऋषिपदवीमलभत । एकदा अयं प्रातःकाले गंगा स्नानं कृत्वा स्वाश्रमं प्रति अगच्छत् । मार्गे व्याधबाणविद्धं क्रौञ्चं दृष्ट्वा तस्य मुखात् स्वयमेव श्लोकः निःसृतः । नारदमुनिप्रेरणया वाल्मीकिः रामचरितमाश्रित्य 'रामायणम्' नामकं महाकाव्यमरचयत् । तदा 'आदि-कविः' इति नाम्ना प्रसिद्धः अभवत् । अस्य रामायणं न केवलं संस्कृतभाषायाः आदिकाव्यम् अस्ति, अपि तु भारतीयानां सर्वेषामपि भाषाणां रामचरित-साहित्यस्य मूलाधारः। धन्यः महाकविः वाल्मीकिः यस्य कविता देशकालातीता अस्ति ।

क्रौञ्च इति अयं विशेषः -

1. मृगविशेषः
2. खाद्यविशेषः
3. पक्षिविशेषः
4. वृक्षविशेषः

Correct Answer :-

- पक्षिविशेषः

5)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

स्मृतिविभ्रमस्य कारणम् इदम् -

1. क्रोधः
2. सम्मोहः
3. सङ्गः
4. सङ्गीतम्

Correct Answer :-

- सम्मोहः

6)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

अङ्गिरसगोत्र- उत्पन्नः वाल्मीकिः पूर्वं दस्युः आसीत् । तदा तस्य नाम रत्नाकरः आसीत् । वने निवसन् अयं पथिकान् आक्रम्य तेषां धनमाहृत्य स्वपरिवारपालनं करोति स्म । एकदा नारदं बद्धवा स धनं दातुमवदत्। नारदः अवदत् - 'येषां परिवारजनानां पालनाय त्वं पापकर्म करोषि किं ते पापफलेऽपि सहभागिनः भविष्यन्ति ? गृहं गत्वा रत्नाकरः तान् अपृच्छत् । तेऽवदन् अस्माकं परिपालनं तव कर्तव्यम् । न वयं पापभागिनः इति ।
तदा मुनेर्नारदस्य उपदेशेन अयं परमेश्वरभक्तः अभवत् । तपसा अयं ऋषिपदवीमलभत । एकदा अयं प्रातःकाले गंगा स्नानं कृत्वा स्वाश्रमं प्रति अगच्छत् । मार्गे व्याधबाणविद्धं क्रौञ्चं दृष्ट्वा तस्य मुखात् स्वयमेव श्लोकः निःसृतः । नारदमुनिप्रेरणया वाल्मीकिः रामचरितमाश्रित्य 'रामायणम्' नामकं महाकाव्यमरचयत् । तदा 'आदि-कविः' इति नाम्ना प्रसिद्धः अभवत् । अस्य रामायणं न केवलं संस्कृतभाषायाः आदिकाव्यम् अस्ति, अपि तु भारतीयानां सर्वेषामपि भाषाणां रामचरित-साहित्यस्य मूलाधारः। धन्यः महाकविः वाल्मीकिः यस्य कविता देशकालातीता अस्ति ।

'स्वाश्रमः' इत्यस्य विग्रहवाक्यम् एवं भवति -

1. स्वतः आश्रमः
2. स्वयम् आश्रमः
3. स्वस्य आश्रमः
4. स्वस्मिन् आश्रमः

Correct Answer :-

- स्वस्य आश्रमः

7)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

अङ्गिरसगोत्र- उत्पन्नः वाल्मीकिः पूर्वं दस्युः आसीत् । तदा तस्य नाम रत्नाकरः आसीत् । वने निवसन् अयं पथिकान् आक्रम्य तेषां धनमाहृत्य स्वपरिवारपालनं करोति स्म । एकदा नारदं बद्धवा स धनं दातुमवदत्। नारदः अवदत् - 'येषां परिवारजनानां पालनाय त्वं पापकर्म करोषि किं ते पापफलेऽपि सहभागिनः भविष्यन्ति ? गृहं गत्वा रत्नाकरः तान् अपृच्छत् । तेऽवदन् अस्माकं परिपालनं तव कर्तव्यम् । न वयं पापभागिनः इति ।
तदा मुनेर्नारदस्य उपदेशेन अयं परमेश्वरभक्तः अभवत् । तपसा अयं ऋषिपदवीमलभत । एकदा अयं प्रातःकाले गंगा स्नानं कृत्वा स्वाश्रमं प्रति अगच्छत् । मार्गे व्याधबाणविद्धं क्रौञ्चं दृष्ट्वा तस्य मुखात् स्वयमेव श्लोकः निःसृतः । नारदमुनिप्रेरणया वाल्मीकिः रामचरितमाश्रित्य 'रामायणम्' नामकं महाकाव्यमरचयत् । तदा 'आदि-कविः' इति नाम्ना प्रसिद्धः अभवत् । अस्य रामायणं न केवलं संस्कृतभाषायाः आदिकाव्यम् अस्ति, अपि तु भारतीयानां सर्वेषामपि भाषाणां रामचरित-साहित्यस्य मूलाधारः। धन्यः महाकविः वाल्मीकिः यस्य कविता देशकालातीता अस्ति ।

वाल्मीकिः अनेन नाम्ना प्रसिद्धोऽभवत् -

1. आदिकविः
2. कविकुलगुरुः
3. वरकविः
4. देवकविः

Correct Answer :-

- आदिकविः

8)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

मम सुप्रियं पुस्तकं श्रीमद्भगवद्गीताऽस्ति । इयं महाभारतमूला वर्तते । तत्त्वतो महाभारतस्य सारं निःसार्य श्रीमद्भगवद्गीतायां निहितं श्रीवेदव्यासेन । गीतायाम् उपनिषदः सारः अपि अस्ति । उक्तं हि-“सर्वोपनिषदो गावः दोग्धा गोपालनन्दनः । पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता, दुग्धं गीताऽमृतं महत्” । “गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः । या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता” ।
स्वयं भगवान् श्रीकृष्णः गीतायाः माहात्म्यमेवं वर्णयति -“श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाल्लोकन्प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम्” । गीता धर्मज्ञानस्य एकः महान् कोषोऽस्ति । जीवनविकासाय सर्वे अपि विचाराः गीयातां दृश्यन्ते । तेषां सामञ्जस्यम् अपि अत्र श्लाघ्यं खलु । गीतायाः अनासक्तिकर्मयोग-सिद्धान्तः महत्त्वपूर्णः खलु । अयम् एव सिद्धान्तः आर्यधर्मस्य सर्वोत्कृष्टः सिद्धान्तः अस्ति । गीताधर्मः क्रान्तिकारी, प्रगतिशीलः, समुच्चयात्मकः च अस्ति । गीतायाः भक्तिमार्गे न योनिभेदः, न जातिभेदः न च श्रेणीभेदः दृश्यते । विदेशेषु अपि दर्शनशास्त्रविषये गीता पाठ्यपुस्तक-रूपेण स्वीकृता अस्ति । किं बहुना यावत् कालं मनुष्यः तापत्रयपीडितो भविष्यति तावत्कालं सः श्रीमद्भगवद्गीतां श्रुत्वा पठित्वा च शान्तिं लप्स्यति ।

एतदर्तं गीतां पठेत् ।

1. जीवनविकासार्थं
2. लोभार्थं
3. धनार्थं
4. स्तुत्यर्थं

Correct Answer :-

- जीवनविकासार्थं

9)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

मम सुप्रियं पुस्तकं श्रीमद्भगवद्गीताऽस्ति । इयं महाभारतमूला वर्तते । तत्त्वतो महाभारतस्य सारं निःसार्य श्रीमद्भगवद्गीतायां निहितं श्रीवेदव्यासेन । गीतायाम् उपनिषदः सारः अपि अस्ति । उक्तं हि-"सर्वोपनिषदो गावः दोग्धा गोपालनन्दनः । पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता, दुग्धं गीताऽमृतं महत्" । "गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः । या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता" ।
स्वयं भगवान् श्रीकृष्णः गीतायाः माहात्म्यमेवं वर्णयति -"श्रद्धावाननसूयश्च श्रृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाल्लोकन्प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम्" । गीता धर्मज्ञानस्य एकः महान् कोषोऽस्ति । जीवनविकासाय सर्वे अपि विचाराः गीयातां दृश्यन्ते । तेषां सामञ्जस्यम् अपि अत्र श्लाघ्यं खलु । गीतायाः अनासक्तिकर्मयोग-सिद्धान्तः महत्त्वपूर्णः खलु । अयम् एव सिद्धान्तः आर्यधर्मस्य सर्वोत्कृष्टः सिद्धान्तः अस्ति । गीताधर्मः क्रान्तिकारी, प्रगतिशीलः, समुच्चयात्मकः च अस्ति । गीतायाः भक्तिमार्गे न योनिभेदः, न जातिभेदः न च श्रेणीभेदः दृश्यते । विदेशेषु अपि दर्शनशास्त्रविषये गीता पाठ्यपुस्तक-रूपेण स्वीकृता अस्ति । किं बहुना यावत् कालं मनुष्यः तापत्रयपीडितो भविष्यति तावत्कालं सः श्रीमद्भगवद्गीतां श्रुत्वा पठित्वा च शान्तिं लप्स्यति ।

भगवद्गीता इतः स्वीकृतास्ति ।

1. रामायणात्
2. हरिवंशात्
3. रघुवंशात्
4. महाभारतात्

Correct Answer :-

- महाभारतात्

10)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परादेवता
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥

सुभाषितोक्तरीत्या पशुः अयम् अस्ति -

1. राजा
2. विद्यादानी
3. विद्याविहीनः
4. विद्यासम्पन्नः

Correct Answer :-

- विद्याविहीनः

---

11) श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

अत्र समूहेतरपदम् अस्ति -

1. अभिजायते
2. उपजायते
3. प्रणश्यति

4. सञ्जायते

Correct Answer :-

- प्रणश्यति

12) श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परादेवता
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥

मानवस्य अधिकरूपमस्ति -

1. केशविन्यासः
2. देहसौन्दर्यं
3. विद्या
4. नववस्त्रधरणं

Correct Answer :-

- विद्या

13)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

अङ्गिरसगोत्र- उत्पन्नः वाल्मीकिः पूर्वं दस्युः आसीत् । तदा तस्य नाम रत्नाकरः आसीत् । वने निवसन् अयं पथिकान् आक्रम्य तेषां धनमाहृत्य स्वपरिवारपालनं करोति स्म । एकदा नारदं बद्ध्वा स धनं दातुमवदत्। नारदः अवदत् - 'येषां परिवारजनानां पालनाय त्वं पापकर्म करोषि किं ते पापफलेऽपि सहभागिनः भविष्यन्ति ? गृहं गत्वा रत्नाकरः तान् अपृच्छत् । तेऽवदन् अस्माकं परिपालनं तव कर्तव्यम् । न वयं पापभागिनः इति ।
तदा मुनेर्नारदस्य उपदेशेन अयं परमेश्वरभक्तः अभवत् । तपसा अयं ऋषिपदवीमलभत । एकदा अयं प्रातःकाले गंगा स्नानं कृत्वा स्वाश्रमं प्रति अगच्छत् । मार्गे व्याधबाणविद्धं क्रौञ्चं दृष्ट्वा तस्य मुखात् स्वयमेव श्लोकः निःसृतः । नारदमुनिप्रेरणया वाल्मीकिः रामचरितमाश्रित्य 'रामायणम्' नामकं महाकाव्यमरचयत् । तदा 'आदि-कविः' इति नाम्ना प्रसिद्धः अभवत् । अस्य रामायणं न केवलं संस्कृतभाषायाः आदिकाव्यम् अस्ति, अपि तु भारतीयानां सर्वेषामपि भाषाणां रामचरित-साहित्यस्य मूलाधारः। धन्यः महाकविः वाल्मीकिः यस्य कविता देशकालातीता अस्ति ।

एतेषु गोत्रेषु वाल्मीकेः गोत्रोऽस्ति -

1. भारद्वाजगोत्र:
2. अङ्गिरसगोत्र:
3. गोतमगोत्र:
4. विश्वामित्रगोत्र:

Correct Answer :-

- अङ्गिरसगोत्र:

14)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

"तेषूपजायते" पदे अयं सन्धिः अस्ति -

1. यण् सन्धिः
2. दीर्घसन्धिः
3. श्चुत्वसन्धिः
4. यान्तावान्तादेशसन्धिः

Correct Answer :-

• दीर्घसन्धिः

15)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परादेवता
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥

"वागर्थाविव" इति पदस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति -

1. वागर्थाव+इव
2. वगर्थ+अविव
3. वाक्+अर्थ
4. वागर्थौ+इव

Correct Answer :-

. वागर्थौ+इव

16) श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

सङ्गात् किम् सञ्जायते?

1. एकोऽपि न
2. कामः
3. सामः
4. प्रेमः

Correct Answer :-

. कामः

17)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

मम सुप्रियं पुस्तकं श्रीमद्भगवद्गीताऽस्ति । इयं महाभारतमूला वर्तते । तत्त्वतो महाभारतस्य सारं निःसार्य श्रीमद्भगवद्गीतायां निहितं श्रीवेदव्यासेन । गीतायाम् उपनिषदः सारः अपि अस्ति । उक्तं हि-"सर्वोपनिषदो गावः दोग्धा गोपालनन्दनः । पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता, दुग्धं गीताऽमृतं महत्" । "गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः । या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता" ।
स्वयं भगवान् श्रीकृष्णः गीतायाः माहात्म्यमेवं वर्णयति -"श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाल्लोकन्प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम्" । गीता धर्मज्ञानस्य एकः महान् कोषोऽस्ति । जीवनविकासाय सर्वे अपि विचाराः गीयातां दृश्यन्ते । तेषां सामञ्जस्यम् अपि अत्र श्लाघ्यं खलु । गीतायाः अनासक्तिकर्मयोग-सिद्धान्तः महत्त्वपूर्णः खलु । अयम् एव सिद्धान्तः आर्यधर्मस्य सर्वोत्कृष्टः सिद्धान्तः अस्ति । गीताधर्मः क्रान्तिकारी, प्रगतिशीलः, समुच्चयात्मकः च अस्ति । गीतायाः भक्तिमार्गे न योनिभेदः, न जातिभेदः न च श्रेणीभेदः दृश्यते । विदेशेषु अपि दर्शनशास्त्रविषये गीता पाठ्यपुस्तक-रूपेण स्वीकृता अस्ति । किं बहुना यावत् कालं मनुष्यः तापत्रयपीडितो भविष्यति तावत्कालं सः श्रीमद्भगवद्गीतां श्रुत्वा पठित्वा च शान्तिं लप्स्यति ।

अस्य धर्मस्य महत्वपूर्णसिद्धान्तः गीता ।

1. इस्लाम्-धर्मस्य

2. आर्य-धर्मस्य

3. फार्सी-धर्मस्य

4. क्रैस्त-धर्मस्य

Correct Answer :-

- आर्य-धर्मस्य

18)

परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

मम सुप्रियं पुस्तकं श्रीमद्भगवद्गीताऽस्ति । इयं महाभारतमूला वर्तते । तत्त्वतो महाभारतस्य सारं निःसार्य श्रीमद्भगवद्गीतायां निहितं श्रीवेदव्यासेन । गीतायाम् उपनिषदः सारः अपि अस्ति । उक्तं हि-"सर्वोपनिषदो गावः दोग्धा गोपालनन्दनः । पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता, दुग्धं गीताऽमृतं महत्" । "गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः । या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता" ।
स्वयं भगवान् श्रीकृष्णः गीतायाः माहात्म्यमेवं वर्णयति -"श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाल्लोकन्प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम्" । गीता धर्मज्ञानस्य एकः महान् कोषोऽस्ति । जीवनविकासाय सर्वे अपि विचाराः गीयातां दृश्यन्ते । तेषां सामञ्जस्यम् अपि अत्र श्लाघ्यं खलु । गीतायाः अनासक्तिकर्मयोग-सिद्धान्तः महत्त्वपूर्णः खलु । अयम् एव सिद्धान्तः आर्यधर्मस्य सर्वोत्कृष्टः सिद्धान्तः अस्ति । गीताधर्मः क्रान्तिकारी, प्रगतिशीलः, समुच्चयात्मकः च अस्ति । गीतायाः भक्तिमार्गे न योनिभेदः, न जातिभेदः न च श्रेणीभेदः दृश्यते । विदेशेषु अपि दर्शनशास्त्रविषये गीता पाठ्यपुस्तक-रूपेण स्वीकृता अस्ति । किं बहुना यावत् कालं मनुष्यः तापत्रयपीडितो भविष्यति तावत्कालं सः श्रीमद्भगवद्गीतां श्रुत्वा पठित्वा च शान्तिं लप्स्यति ।

गीता अस्य मुखात् निःसृतास्ति ।

1. नकुलस्य

2. युधिष्ठिरस्य

3. अर्जुनस्य

4. पद्मनाभस्य

Correct Answer :-

- पद्मनाभस्य

19) महाभारतम् इत्यत्र समासः भवति -

1. द्वन्द्वसमासः

2. द्विगुसमासः

3. अलुक्समासः

4. कर्मधारयसमासः

Correct Answer :-

- कर्मधारयसमासः

20) महाभारतयुद्धे रचितेषु व्यूहेषु अयं नान्तर्भवति -

1. खड्गव्यूह:

2. चक्रव्यूह:

3. मकरव्यूह:

4. पद्मव्यूह:

Correct Answer :-

- खड्गव्यूह:

21) के 'विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गविहस्तिनि' समदर्शिनः ?

1. गुरवः

2. पण्डिताः

3. अज्ञानिनः

4. मूर्खाः

Correct Answer :-

- पण्डिताः

22) रामेणाचरितः यज्ञोऽस्ति -

1. विश्वजित्

2. राजसूय:

3. अश्वमेध:

4. पुत्रेष्टिः

Correct Answer :-

- अश्वमेधः

23) श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परादेवता
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥

एतौ जगतः पितरौ -

1. शारदाब्रह्माणौ
2. सूर्यचन्द्रौ
3. हरिहरौ
4. पार्वतीपरमेश्वरौ

Correct Answer :-

- पार्वतीपरमेश्वरौ

24) निम्नलिखितेषु महाभारताधारितं भासस्य नाटकमस्ति -

1. एकोऽपि न
2. बालचरितम्
3. मध्यमव्यायोगः
4. अभिषेकनाटकम्

Correct Answer :-

- मध्यमव्यायोगः

25) एतासां एका दशरथस्य पत्नी न -

1. कौसल्या
2. सुमित्रा
3. कैकेयी
4. सीता

Correct Answer :-

- सीता

26) भीष्मस्य गुरुः अस्ति -

1. परशुरामः
2. विश्वामित्रः
3. वशिष्ठः
4. जमदग्निः

Correct Answer :-

- परशुरामः

27) अन्नं कथं सम्भवति ?

1. कृषकात्
2. पर्जन्यात्
3. वृषभात्
4. महाराजात्

Correct Answer :-

- पर्जन्यात्

28)

श्लोकौ पठित्वा अधोनिर्दिष्टस्य प्रश्नस्य शुद्धमुत्तरं सूचयत -

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

क्रोधः एतस्मात् अभिजायते -

1. कामात्
2. सम्मोहात्
3. सङ्गात्
4. आहारात्

Correct Answer :-

- कामात्

---

29) अम्भसि नावं कः हरति ?

1. आकाशः
2. रज्जुः
3. वायुः
4. भूमिः

Correct Answer :-

- वायुः

---

30) नाट्यशास्त्रस्य व्याख्यानग्रन्थः अस्ति -

1. श्रीभारती
2. सुरभारती
3. अभिनयभारती
4. अभिनवभारती

Correct Answer :-

अभिनवभारती

Topic:- HINDI (HIN)

1) शिक्षण सहायक सामग्री का चुनाव करते समय ध्यान देना चाहिए कि वह -

1. उपरोक्त सभी
2. केवल शिक्षण बिंदु के लिए सरल सुगम तथा उपयुक्त हो।
3. केवल प्रकरण से सम्बंधित हो।
4. केवल कक्षा के अधिगम लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हो।

Correct Answer :-

- उपरोक्त सभी

2) जो दूसरों के मार्ग में _________, उन्हें स्वयं दुःख उठाना पड़ता है। वाक्य में कौन सा मुहावरा प्रयुक्त होगा ?

1. अँधेरा करते हैं
2. कीचड उछालते हैं
3. फूल बिछाते हैं
4. कांटे बिछाते हैं

Correct Answer :-

- कांटे बिछाते हैं

3) किस शिक्षण सूत्र के अनुसरण से बालक में रुचि जागृत होती है?

1. पूर्ण से अंश की ओर
2. मूर्त से अमूर्त की ओर
3. विशेष से सामान्य की ओर
4. आगमन से निगमन की ओर

Correct Answer :-

- आगमन से निगमन की ओर

4) किस प्रकार के पत्रों में संलग्नक का उल्लेख किया जाता है?

1. पारिवारिक पत्र
2. व्यक्तिगत पत्र
3. अनौपचारिक पत्र
4. सरकारी पत्र

Correct Answer :-

- सरकारी पत्र

5) इनमें से किस व्यक्तित्व का नाम नुक्कड़ नाटक से जुड़ा हुआ है?

1. दुष्यंत कुमार
2. मोहन राकेश
3. सफदर हाशमी
4. हबीब तनवीर

Correct Answer :-

- सफदर हाशमी

6) इनमें से किस प्रकार के पत्र में संदर्भ देना अनिवार्य होता है?

1. पारिवारिक पत्र

2. कौटुंबिक पत्र

3. नौकरी हेतु आवेदन पत्र

4. इनमें से कोई नहीं

Correct Answer :-

- नौकरी हेतु आवेदन पत्र

---

7) 'अंजो दीदी' किसके द्वारा लिखित नाटक है?

1. मोहन राकेश

2. उपेंद्रनाथ अश्क

3. भारतेंदु हरिश्चंद्र

4. भीष्म साहनी

Correct Answer :-

- उपेंद्रनाथ अश्क

---

8) 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' किस शहर में स्थापित है?

1. मुंबई

2. बेंगलूरू

3. इलाहाबाद

4. दिल्ली

Correct Answer :-

- दिल्ली

---

9) 'पल्टू बाबू रोड' किस उपन्यासकार की रचना है?

1. अज्ञेय

2. मुशी प्रेमचंद

3. धर्मवीर भारती

4. फणीश्वरनाथ रेणु

Correct Answer :-

- फणीश्वरनाथ रेणु

---

10) 'फीस माफी के लिए प्रार्थना-पत्र' किसे लिखा जाएगा?

1. शिक्षा मंत्री

2. पिताजी

3. अध्यापक

4. प्रधानाचार्य

Correct Answer :-

- प्रधानाचार्य

---

11) 'कबीरा खड़ा बाज़ार में' किसके द्वारा रचित नाटक है?

1. दुष्यंत कुमार

2. मोहन राकेश

3. भीष्म साहनी

4. हरिकृष्ण प्रेमी

Correct Answer :-

- भीष्म साहनी

---

12) ‘कश्मीर कुसुम’ किसके द्वारा लिखित निबंध है?

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. भारतेंदु हरिश्चंद्र
3. प्रताप नारायण मिश्र
4. बाल कृष्ण भट्ट

Correct Answer :-

- भारतेंदु हरिश्चंद्र

---

13) ‘द्विवेदी युग’ किस महान लेखक के नाम पर रखा गया है?

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. राजेंद्र प्रसाद द्विवेदी
3. तुला राम द्विवेदी
4. महावीर प्रसाद द्विवेदी

Correct Answer :-

- महावीर प्रसाद द्विवेदी

---

14) ‘हिंदी कविता का विकास’ निबंध किस श्रेणी के निबंध में आयेगा?

1. साहित्यिक निबंध
2. रचनात्मक निबंध
3. सर्जनात्मक निबंध
4. समाहार निबंध

Correct Answer :-

- साहित्यिक निबंध

---

15) ‘वह रुपया चाहता था और वह उसे मिल गया’ का मिश्र वाक्य में रूपांतरण निम्न में से कौन सा है?

1. वह रुकना चाहता था उसे मिल गया।
2. वह रुपया चाहता था उसे मिल गया।
3. वह रुपया चाहता था उसे पैसा मिल गया।
4. वह जो रुपया चाहता था उसे वो मिल गया।

Correct Answer :-

- वह जो रुपया चाहता था उसे वो मिल गया।

---

16) ‘जो निबंध बौद्धिक जगत की अपेक्षा ह्रदय जगत से विशेष रूप से सम्बद्ध होते हैं’ वो कौन से निबंध कहलाते हैं?

1. भावात्मक निबंध
2. उद्दीपात्मक निबंध
3. वर्णनात्मक निबंध
4. विचारात्मक निबंध

Correct Answer :-

- भावात्मक निबंध

---

17) ‘प्रयोगवाद’ शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ‘प्रयोगवादी रचनाएँ’ शीर्षक निबंध में हुआ है, इसके निबंधकार हैं-

1. रामविलास शर्मा
2. नंद दुलारे वाजपेयी
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
4. सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन ‘अज्ञेय’

Correct Answer :-

- नंद दुलारे वाजपेयी

18) किस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः सात भगण और अंत में दो गुरु होते हैं तथा प्रत्येक चरण के वर्णों की संख्या 23 होती है?

1. सुमुखी सवैया छन्द
2. मत्तगयन्द सवैया छन्द
3. मदिरा सवैया छन्द
4. किरीट सवैया छन्द

Correct Answer :-

- मत्तगयन्द सवैया छन्द

19) बालमुकुंद गुप्त द्वारा लिखित 'शिवशंभु का चिट्ठा' किस प्रकार के निबंध हैं?

1. व्यंग्यात्मक निबंध
2. कलात्मक निबंध
3. पर्यावरण विषयक निबंध
4. ललित निबंध

Correct Answer :-

- व्यंग्यात्मक निबंध

20) सन् 1943 ई. में अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' में निम्न में से कौन-से कवि की रचनाएँ संग्रहित नही थी?

1. प्रभाकर माचवे
2. केदारनाथ अग्रवाल
3. नेमिचंद्र जैन
4. भारत भूषण अग्रवाल

Correct Answer :-

- केदारनाथ अग्रवाल

21) छात्रों को अपनी मातृभाषा में बोलने के अवसर प्रदान करने चाहिए, ताकि -

1. छात्र अपने-आपको कमजोर न समझे।
2. छात्र अपनी निजी कठिनाईयां बता सकें।
3. छात्र अपना गृहकार्य आसानी से कर सकें।
4. छात्रों के लिए अधिगम प्रक्रिया सरल एवं सहज हो सके।

Correct Answer :-

- छात्रों के लिए अधिगम प्रक्रिया सरल एवं सहज हो सके।

22) जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 16 और 12 के बाद विराम (यति) और 28 मात्राएं होती हैं उस छन्द को कहते हैं-

1. त्रिभंगी छन्द
2. सरसी छन्द
3. रोला छन्द
4. हरिगीतिका छन्द

Correct Answer :-

- हरिगीतिका छन्द

23) पठन कौशल में आवश्यक है -

1. परोक्ष विधि
2. अर्थ ग्रहण
3. शब्द चयन
4. प्रत्यक्ष विधि

Correct Answer :-

- अर्थ ग्रहण

24) पत्र के अंत में 'पुनश्च' का प्रयोग किस लिए किया जाता है?

1. पत्र को फिर से भेजने के लिए
2. पत्र में भूल गई महत्वपूर्ण बात लिखने के लिए
3. विषय वस्तु को छोटा करने के लिए
4. प्राप्तकर्ता का पता लिखने के लिए

Correct Answer :-

- पत्र में भूल गई महत्वपूर्ण बात लिखने के लिए

25) पत्र लेखन में 'बाहरी सजावट' में किस बिन्दु का समावेश नहीं होता है?

1. पत्र के कागज का विषयानुरूप होना
2. पत्र का योग्य क्रम
3. पत्र के कागज़ का रंग
4. विराम चिन्हों का प्रयोग

Correct Answer :-

- पत्र के कागज़ का रंग

26) औपचारिक एवं अनौपचारिक संबंधो में किस तरह की भाषा का प्रयोग करना चाहिए?

1. एक तरह की भाषा
2. कठिन भाषा
3. सामान्य भाषा
4. अलग-अलग भाषा

Correct Answer :-

- अलग-अलग भाषा

27) प्रयोगवादी कविता की मुख्य प्रवृत्तियों में से नहीं है?

1. अहंवादी प्रवृत्ति
2. उपमानों की नवीनता
3. बौद्धिकता का प्राधान्य
4. रहस्यवादी भावना

Correct Answer :-

- रहस्यवादी भावना

28) प्रयोग या प्रयोक्ता के आधार पर इनमें से कौन सी दो भाषाएं नहीं हैं?

1. कृत्रिम और अकृत्रिम भाषा
2. राष्ट्र और राज भाषा
3. संपर्क और व्यावसायिक भाषा
4. साहित्यिक और बोल-चाल की भाषा

Correct Answer :-

- कृत्रिम और अकृत्रिम भाषा

29) किस काव्य के छन्द, कथासूत्र की व्यवस्था से पिरोये रहते हैं और उसके छंदों के क्रम को बदला नहीं जा सकता है।

1. प्रबंध काव्य
2. निबंध काव्य

3. मुक्तक काव्य

4. निबंध काव्य

Correct Answer :-

- प्रबंध काव्य

30) भाषा शिक्षण में विभिन्न स्तरों के बच्चों की चुनौतियों के लिए एक सफल दृष्टिकोण है -

1. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

2. आध्यात्मिक दृष्टिकोण

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण

4. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

Correct Answer :-

- मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

31) भाषा की परिपक्वता से तात्पर्य है -

1. व्याकरणिक नियमों की जानकारी होना।

2. भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करना।

3. भाषा के अवयवों और स्वरों पर अनियंत्रण होना।

4. विविध भाषाओं की जानकारी होना।

Correct Answer :-

- व्याकरणिक नियमों की जानकारी होना।

32) भाषा सीखने की प्रक्रिया में बालक सर्वप्रथम किस भाषा को सीखता है?

1. देवभाषा

2. राष्ट्रभाषा

3. मातृभाषा

4. राजभाषा

Correct Answer :-

- मातृभाषा

33) भाषा अधिगम में किन छात्रों को कठिनाई नहीं होती है?

1. जिसके अभिभावक शिक्षित हों।

2. जिसमें आत्मविश्वास की कमी हो।

3. जिनका मानसिक स्वास्थ्य ठीक हो।

4. जिसकी पारिवारिक स्थिति ठीक हो।

Correct Answer :-

- जिनका मानसिक स्वास्थ्य ठीक हो।

34) कक्षा में प्रयोग की गई कोई भी सामग्री तभी शैक्षिक सामग्री कही जा सकती है जब -

1. वह शिक्षक के रुचि के अनुरूप हो।

2. छात्रों के मनोरंजन में सहायक हो।

3. कक्षा के किसी उद्देश्य तक पहुँचने में असफल हो।

4. वह सीखने-सिखाने में उपयोगी साबित हो।

Correct Answer :-

- वह सीखने-सिखाने में उपयोगी साबित हो।

35) स्कूलों में बालकों की सुनने की प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए -

1. उपरोक्त सभी।

2. केवल विभिन्न घटनाओं को सुनाना चाहिए।

3. केवल कविताएँ सुनानी चाहिए।

4. केवल कहानी सुनानी चाहिए।

Correct Answer :-

- उपरोक्त सभी।

36) मुक्तिबोध की रचना 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' की विधा क्या है?

1. डायरी

2. काव्य-संग्रह

3. आलोचना

4. कहानी-संग्रह

Correct Answer :-

- काव्य-संग्रह

37) मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' की रचना किस शैली में की गई है?

1. प्रबंध

2. फैंटसी

3. नाटकीय

4. आत्मालाप

Correct Answer :-

- फैंटसी

38) सुलेख से तात्पर्य है -

1. स्वयं से लिखा हुआ आलेख

2. सुना हुआ लेख

3. सुंदर लेख

4. लेख की सुंदर कल्पना

Correct Answer :-

- सुंदर लेख

39) किस रचनाकार को 'प्रगतिवाद का शलाका पुरुष' कहा जाता है?

1. गजानन माधव मुक्तिबोध

2. केदारनाथ अग्रवाल

3. नागार्जुन

4. त्रिलोचन शास्त्री

Correct Answer :-

- नागार्जुन

40) निम्न में से कौन सी निबंध की विशेषता नहीं है?

1. व्यक्तित्व का प्रकाशन

2. छन्द बद्धता

3. अन्विति का प्रभाव

4. संक्षिप्तता

Correct Answer :-

- छन्द बद्धता

41) निम्न में से कौन सा महाकाव्य का भाग नहीं है?

1. रस
2. नायक
3. रूप सज्जा
4. कथावस्तु और उसका संगठन

Correct Answer :-

- रूप सज्जा

42) निम्नलिखित पंक्तियों में कौन सा छन्द है?

तिमिर तिरोहित हुए तिमिरहर है दिखलाता।

गत विभावरी हुए विभा वासर है पाता ।।

टले मलिनता सकल दिशा हैं अमलिन होती।

भगे तमीचर नीरवता तमचुर-ध्वनि खोती।।

1. वसंत तालिका छन्द
2. छप्पय छन्द
3. द्रुतविलंबित छन्द
4. कुण्डलिया छन्द

Correct Answer :-

- छप्पय छन्द

43) निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

तुम हो अखिल विश्व में ,

या यह अखिल विश्व है तुम में ?

1. भ्रांतिमान अलंकार
2. वीप्सा अलंकार
3. संदेह अलंकार
4. उदाहरण अलंकार

Correct Answer :-

- संदेह अलंकार

44) लंबी कविता 'असाध्य वीणा' किसके द्वारा लिखित है?

1. सूर्यकान्त त्रिपाठी
2. सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय'
3. मुक्तिबोध
4. महादेवी वर्मा

Correct Answer :-

- सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय'

45) समाचार पत्र के संपादक को लिखे जाने वाले पत्र की निम्न में से कौन-सी उपयोगिता नहीं होती है?

1. अन्याय और अत्याचार का विरोध कर सकते हैं।
2. सरकारी नीतियो और योजनाओं के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कर सकते हैं।
3. कानूनी कार्यवाही कर सकते हैं।
4. जनहितकारी योजनाओं के लिए जनसमर्थन जुटा सकते हैं।

Correct Answer :-

- कानूनी कार्यवाही कर सकते हैं।

46) अठारहवीं शती के अंतिम चरण तक आते-आते यूरोप का मानसिक क्षितिज बहुत कुछ बदल चुका था। नवजागरण के क्रमिक विकास की परिणति स्वरूप जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान का आलोक फैल चुका था। अनेक प्रकार के वैज्ञानिक अविष्कार हो चुके थे। औद्योगिक क्रांति ने आर्थिक ढाँचे में आमूल परिवर्तन ला दिया था। सामन्तशाही पृष्ठभूमि में चली गई थी। मध्यवर्ग का उदय हो चुका था। पूँजीवादी व्यवस्था अपनी जड़ें जमा रही थी। स्वतंत्रता और समानता के मूल्य उभरकर सामने आ गए थे। फ्रांस की राज्यक्रांति ने स्वतंत्र चिंतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

उपर्युक्त परिच्छेद को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर लिखिए:

नवजागरण के क्रमिक विकास के कारण कौन से मूल्य उभरकर सामने आ रहे थे?

1. पूँजीवादी व्यवस्था

2. सामन्तशाही

3. वैज्ञानिक आविष्कार

4. स्वतंत्रता और समानता

Correct Answer :-

- स्वतंत्रता और समानता

---

47) अठारहवीं शती के अंतिम चरण तक आते-आते यूरोप का मानसिक क्षितिज बहुत कुछ बदल चुका था। नवजागरण के क्रमिक विकास की परिणति स्वरूप जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान का आलोक फैल चुका था। अनेक प्रकार के वैज्ञानिक अविष्कार हो चुके थे। औद्योगिक क्रांति ने आर्थिक ढाँचे में आमूल परिवर्तन ला दिया था। सामन्तशाही पृष्ठभूमि में चली गई थी। मध्यवर्ग का उदय हो चुका था। पूँजीवादी व्यवस्था अपनी जड़ें जमा रही थी। स्वतंत्रता और समानता के मूल्य उभरकर सामने आ गए थे। फ्रांस की राज्यक्रांति ने स्वतंत्र चिंतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

उपर्युक्त परिच्छेद को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर लिखिए:

गद्यांश के अनुसार किस कारण आर्थिक ढाँचे में आमूल परिवर्तन आए?

1. पूंजीवाद

2. नवजागरण

3. मध्यवर्ग का उदय

4. औद्योगिक क्रांति

Correct Answer :-

- औद्योगिक क्रांति

---

48) अठारहवीं शती के अंतिम चरण तक आते-आते यूरोप का मानसिक क्षितिज बहुत कुछ बदल चुका था। नवजागरण के क्रमिक विकास की परिणति स्वरूप जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान का आलोक फैल चुका था। अनेक प्रकार के वैज्ञानिक अविष्कार हो चुके थे। औद्योगिक क्रांति ने आर्थिक ढाँचे में आमूल परिवर्तन ला दिया था। सामन्तशाही पृष्ठभूमि में चली गई थी। मध्यवर्ग का उदय हो चुका था। पूँजीवादी व्यवस्था अपनी जड़ें जमा रही थी। स्वतंत्रता और समानता के मूल्य उभरकर सामने आ गए थे। फ्रांस की राज्यक्रांति ने स्वतंत्र चिंतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

उपर्युक्त परिच्छेद को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर लिखिए:

गद्यांश के अनुसार किस कारणवश विज्ञान का आलोक फैला?

1. नवजागरण के क्रमिक विकास के कारण

2. पूँजीवादी व्यवस्था के कारण

3. सामंतशाही के पृष्ठभूमि में जाने के कारण

4. स्वतंत्र चिंतन के कारण

Correct Answer :-

- नवजागरण के क्रमिक विकास के कारण

---

49) अठारहवीं शती के अंतिम चरण तक आते-आते यूरोप का मानसिक क्षितिज बहुत कुछ बदल चुका था। नवजागरण के क्रमिक विकास की परिणति स्वरूप जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान का आलोक फैल चुका था। अनेक प्रकार के वैज्ञानिक अविष्कार हो चुके थे। औद्योगिक क्रांति ने आर्थिक ढाँचे में आमूल परिवर्तन ला दिया था। सामन्तशाही पृष्ठभूमि में चली गई थी। मध्यवर्ग का उदय हो चुका था। पूँजीवादी व्यवस्था अपनी जड़ें जमा रही थी। स्वतंत्रता और समानता के मूल्य उभरकर सामने आ गए थे। फ्रांस की राज्यक्रांति ने स्वतंत्र चिंतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

उपर्युक्त परिच्छेद को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर लिखिए:

गद्यांश के अनुसार किस घटना ने स्वतंत्र चिन्तन का मार्ग प्रशस्त किया?

1. नवजागरण

2. राष्ट्रवाद

3. सामन्तशाही

4. फ्रांस की राज्यक्रांति

Correct Answer :-

- फ्रांस की राज्यक्रांति

---

50) अठारहवीं शती के अंतिम चरण तक आते-आते यूरोप का मानसिक क्षितिज बहुत कुछ बदल चुका था। नवजागरण के क्रमिक विकास की परिणति स्वरूप जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान का आलोक फैल चुका था। अनेक प्रकार के वैज्ञानिक अविष्कार हो चुके थे। औद्योगिक क्रांति ने आर्थिक ढाँचे में आमूल परिवर्तन ला दिया था। सामन्तशाही पृष्ठभूमि में चली गई थी। मध्यवर्ग का उदय हो चुका था। पूँजीवादी व्यवस्था अपनी जड़ें जमा रही थी। स्वतंत्रता और समानता के मूल्य उभरकर सामने आ गए थे। फ्रांस की राज्यक्रांति ने स्वतंत्र चिंतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

उपर्युक्त परिच्छेद को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर लिखिए:

प्रस्तुत गद्यांश के लिए उचित शीर्षक हो सकता है?

1. पूंजीवादी व्यवस्था
2. यूरोप में नवजागरण
3. फ्रांस की क्रांति
4. औद्योगिक क्रांति

Correct Answer :-

- यूरोप में नवजागरण

51) नुक्कड़ नाटक कहाँ प्रस्तुत किया जा सकता है?

1. नाट्यग्रहों में
2. रंगशालाओं में
3. किसी भी स्थान पर
4. मंच पर

Correct Answer :-

- किसी भी स्थान पर

52) किसी देश या प्रदेश के राजकाज या प्रशासन में जिस भाषा का प्रयोग होता है उसे निम्न में से कौन सी भाषा कहते हैं?

1. कृत्रिम भाषा
2. गुप्त भाषा
3. संपर्क भाषा
4. राज भाषा

Correct Answer :-

- राज भाषा

53) जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित किस कहानी की पात्र का नाम चंपा है?

1. आकाशदीप
2. गुंडा
3. पुरस्कार
4. ग्राम

Correct Answer :-

- आकाशदीप

54) मूक फिल्म उदहारण है –

1. इनमें से कोई नहीं
2. दृश्य-श्रव्य सामग्री का
3. दृश्य सामग्री का
4. श्रव्य सामग्री का

Correct Answer :-

- दृश्य सामग्री का

55) 'पुलिस चोर को पकड़ता है।', इस वाक्य में अशुद्ध शब्द है -

1. इनमें से कोई नहीं

2. चोर

3. पुलिस

4. पकड़ता

Correct Answer :-

- पकड़ता

56) 'बहुत खाने वाले को थोड़ा सा मिलना', किस लोकोक्ति का अर्थ है?

1. एक अनार सौ बीमार।

2. जो गरजते हैं वो बरसते नहीं

3. ऊँची दुकान फीकी पकवान।

4. ऊँट के मुँह में जीरा।

Correct Answer :-

- ऊँट के मुँह में जीरा।

57) अभिधा और लक्षणा द्वारा अर्थ – बोध न कराने पर जिस शक्ति से अन्य अर्थ निकले उसे कौन सी शब्द शक्ति कहते हैं?

1. शुद्धा लक्षणा शब्द शक्ति

2. गौणी लक्षणा शब्द शक्ति

3. प्रयोजनवती लक्षणा शब्द शक्ति

4. व्यंजना शब्द शक्ति

Correct Answer :-

- व्यंजना शब्द शक्ति

58) सुंदरम कक्षा आठ का छात्र है उसका सतत आकलन करने में सबसे अधिक क्या महत्वपूर्ण है?

1. मौखिक परीक्षा

2. लिखित परीक्षा

3. भाषा-प्रयोग की क्षमता

4. व्याकरण की बारीक जानकारी

Correct Answer :-

- भाषा-प्रयोग की क्षमता

59) CANCELLED

वर्तमान में किस प्रकार का पत्र प्राप्त करने के लिए डाकिया द्वारा आपके हस्ताक्षर लिए जाते हैं?

1. तार (टेलीग्राम)

2. अन्तर्देशीय पत्र

3. स्पीड पोस्ट

4. पंजीकृत डाक

Correct Answer :-

- पंजीकृत डाक

60) सही विकल्प बताएं-

हृदय में द्रुति उत्पन्न करने वाला गुण ________ कहलाता है।

1. श्रृंगार गुण

2. ओज गुण

3. प्रसाद गुण

4. माधुर्य गुण

Correct Answer :-

- माधुर्य गुण